CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संस्कृतप्रचार–पुस्तकमाला सं० ४७

वर्णमाला-गीतावलि

(हँसते-खेलते संस्कृत)

[बालकों को वर्णमाला के साथ-साथ संस्कृत शब्दों को सिखाने का एक अभिनव एवं मनोरञ्जक प्रयोग]

सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय
वाराणसी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लद्दाख उच्च शिक्षा संस्थान

अलीपुर, दिल्ली के

माननीय प्रधानाचार्य, अध्यापकों तथा कर्मचारियों

की

सहायता से प्रकाशित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संस्कृतप्रचार-पुस्तकमाला सं ४७

वर्णमाला-गीतावलि

(हँसते-खेलते संस्कृत)

सम्पादक

वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

(सम्पादक–संस्कृतप्रचार-पुस्तकमाला)

सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय

वाराणसी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक
सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय
डी० ३८/२० हौजकटोरा, वाराणसी।

आवृत्ति प्रथम
संख्या एक हजार
मूल्य एक रुपया

मुद्रक—
सहादुरराम कुशवाहा
हितैषी प्रिंटिंग वर्क्स,
नीचीबाग, वाराणसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आवश्यक निवेदन

उद्देश्य एवं उपयोगिता

जिस प्रकार हिन्दी आदि भाषाओं की वर्णमाला सिखाते समय अ आदि स्वर-वर्णों तथा क आदि व्यंजन वर्णों के साथ "अनार, कबूतर" आदि उन वर्णों से आरम्भ होने वाले शब्दों को भी बतलाने की रीति प्रचलित है और उसके लिये नाना प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित हैं उसी प्रकार संस्कृत वर्णमाला के स्वर-व्यंजन वर्णों के साथ उन वर्णों से आरंभ होने वाले कतिपय व्यवहारोपयोगी संस्कृत शब्दों से बालकों को परिचित करा देने की दृष्टि से इस पुस्तक का सम्पादन किया गया है। यद्यपि इस ढंग की यह पहली पुस्तक नहीं है[1] फिर भी इस की कई विशेषतायें हैं जिनका उल्लेख आगे किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में स्वरों, व्यंजनवर्णों तथा संयुक्ताक्षरों के साथ जितने शब्द दिये गये हैं उनकी संख्या १०४९ के लगभग है। इनमें संज्ञा शब्द ८००, क्रियायें २०६ तथा विशेषण ३६ हैं। इस संख्या में से यदि केवल स्थानपूर्ति के लिये दिये गये शब्दों को छांट दिया जाय तब भी एक हजार शब्द उपयोगी बच जाते हैं। अतः वर्णमाला के साथ अपनी-अपनी मातृभाषा के शब्दों से परिचित हो जाने के बाद यदि बालक इस पुस्तक को भी पढ़ जायें तो उन्हें बहुत कम परिश्रम में ही मनोरंजन के साथ बहुत से व्यवहारोपयोगी संस्कृत शब्दों का भी ज्ञान हो सकता है। जो प्राथमिक पाठशालायें (प्राइमरी स्कूल) संस्कृत विद्यालयों में चलती हैं वहाँ के बालकों को तो प्राइमरी कक्षा समाप्त होने तक इस पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ा ही देना चाहिये। फिर जो लोग अपने बालकों को निश्चित रूप से आगे संस्कृत पढ़ाना चाहते हों उनके लिये तो अपने बालकों को आरंभ से ही इस पुस्तक को पढ़ा देना सर्वथा उपयोगी होगा ही।

पुस्तक की विशेषतायें

१—इस पुस्तक में स्वर एवं व्यंजन वर्णों के साथ जो शब्द दिये गये हैं उन का चयन और संयोजन इस प्रकार किया गया है कि विद्यार्थी वर्णों के साथ उन शब्दों को अनेक लयों में पढ़ सकते हैं और इस प्रकार शब्द सीखने के साथ-साथ कविता और संगीत का भी आनन्द ले सकते हैं।

---

१. देखिये—आचार्य कपिलदेव शर्मा प्रणीत "देवनागर वर्णमाला" नामक सचित्र एवं सर्वाङ्गसुन्दर पुस्तक : मूल्य—साठ पैसे। मिलने का पता—पुस्तक भवन, राँची. बिहार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२—वर्णमाला की अन्य पुस्तकों में वर्णों के लिये केवल एक या दो ही शब्द दिये गये हैं परन्तु इस पुस्तक में एक-एक वर्ण के लिये अनेक शब्द दिये गये हैं। जो वर्ण और शब्द एक लय में आते हैं उन्हें एक जगह रखा गया है। इस प्रकार लयभेद से वर्णों और शब्दों के अनेक उदाहरण दिये गये हैं।

३—इसके अतिरिक्त पहले एक-एक वर्ण के साथ एक-एक शब्द को देकर पीछे एक-एक वर्ण के साथ तीन-तीन शब्द भी दिये गये हैं जो लय के साथ पढ़े जाते हैं और बहुत रुचिकर प्रतीत होते हैं।

४—इस पुस्तक में वर्णों के साथ न केवल शब्द ही अपितु क्रियायें भी दी गई हैं। संस्कृत की जितनी क्रियायें प्रायः दैनिक व्यवहार और साधारण संस्कृत ज्ञान के लिये उपयोगी हैं वे सब वर्णों के साथ अनेक पर्यायों में संगृहीत कर दी गई हैं।

५—वर्णमाला की अन्य पुस्तकों में स्वर-व्यंजन वर्णों के साथ एक या दो शब्द तो दे दिये गये हैं पर व्यंजनवर्णों की स्वराक्षरी (बारह खड़ी) के साथ शब्द नहीं दिये गये हैं। परन्तु इस पुस्तक में स्वराक्षरी के साथ भी शब्द दिये गये हैं जिस से छात्रों को पर्याप्त संस्कृत शब्दों का ज्ञान हो जाता है। इन शब्दों की भी योजना लयबद्ध रूप में ही की गई है ताकि छात्रों को ये शब्द भी सरलता और मनोरंजन के साथ कण्ठस्थ हो जायँ।

६—स्वराक्षरी के बाद पुस्तक में संयुक्ताक्षरों तथा उनसे बने हुए शब्दों की भी एक लम्बी तालिका दी गई है जिसके पढ़ने और लिखने का समुचित अभ्यास हो जाने से छात्रों को अपनी-अपनी भाषा के पढ़ने-लिखने में भी बहुत सहायता मिल सकती है।

७—संयुक्ताक्षरों के बाद संख्यावाचक शब्द तथा पूरणार्थक संख्यावाचक शब्द भी दे दिये गये हैं। प्राइमरी पाठशाला के छात्र यदि प्रार्थना के बाद हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत में भी अपनी गिनती कर लिया करें तो अल्प समय में ही उन्हें ये संस्कृत के संख्यावाची शब्द कण्ठस्थ हो जायेंगे।

८—इस पुस्तक की अन्तिम और सबसे नवीन बात यह है कि इसमें हिन्दी के आधार पर संस्कृत में १० तक का पहाड़ा भी दे दिया गया है। यह बिलकुल नवीन प्रयोग है। छात्रों को हिन्दी की तरह संस्कृत के पहाड़ा को भी सामूहिक रूप से कहने का अभ्यास करना चाहिये।

संक्षेप में यही इस पुस्तक की विशेषतायें हैं जो वर्णमाला की अन्य पुस्तकों में उपलब्ध नहीं हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्रुटियाँ

इस पुस्तक को साङ्गोपाङ्ग रूप से सुन्दर तथा परिपूर्ण बनाने में कतिपय अनिवार्य कारणों से कुछ त्रुटियाँ भी रह गई हैं। इन कारणों में कुछ तो भाषासम्बन्धी हैं और कुछ साधन-सम्बन्धी भी। जहाँ तक संस्कृत वर्णमाला की रचना के कारण त्रुटियाँ रह गई हैं वे निम्नलिखित हैं—

१—देवनागर वर्णमाला के ऋ लृ ङ ञ ण आदि वर्णों से आरम्भ होने वाले शब्द संस्कृत में नहीं मिलते। अतः इनके लिये ऐसे ही शब्द देने पड़े हैं जिनके मध्य अथवा अन्त में इनका प्रयोग हुआ है। ङ और ञ इन दो वर्णों का प्रयोग तो अन्त या मध्य में भी हलन्त के रूप में ही हुआ है क्योंकि इनका सस्वर प्रयोग किसी शब्द में नहीं मिलता।

२—इसी प्रकार झ ट ठ ड ढ थ फ ष आदि वर्णों से आरंभ होने वाले शब्दों की संख्या भी संस्कृत में अत्यन्त अल्प है। अतः इन वर्णों के लिये भी कहीं-कहीं ऐसे ही शब्द देने पड़े हैं जिनके मध्य अथवा अन्तमें ही इनका प्रयोग हुआ है।

३—यह त्रुटि स्वराक्षरी के शब्दों में तो और भी बढ़ गई है। क्योंकि व्यंजन वर्णों में भ्र, टवर्ग, थ, फ, ष, य आदि ऐसे वर्ण हैं जिनमें ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ आदि स्वर विरले ही मिलते हैं। अतः ऐसे स्थलों पर शब्दरूपों और धातुओं का प्रयोग कर किसी प्रकार स्थानपूर्ति करनी पड़ी है। फिर भी दो-चार स्थल ऐसे भी रह गये हैं जिनकी स्थानपूर्ति भी नहीं की जा सकी है। ऐसे स्थलों पर लयभंग न हो इसके लिये वहाँ पर 'शून्यम्' यह पद जोड़ दिया गया है।

४—इस पुस्तक में वर्णों और शब्दों को लयबद्ध रूप में ही संकलित करने का निश्चय था और वैसा ही किया भी गया है। परन्तु इस निश्चय के कारण त्रुटि यह हो गई है कि लय में न बैठ सकने के कारण कहीं-कहीं सरल एवं प्रचलित शब्द छूट गये हैं और उनके स्थान पर कठिन और अप्रचलित शब्दों को रखना पड़ा है। फिर भी कहीं-कहीं उपयुक्त शब्दों के अभाव में लयभंग भी करना पड़ा है और छोटे-बड़े शब्दों का एक साथ सन्निवेश किया गया है।

५—सब से बड़ी त्रुटि इस पुस्तक के प्रकाशन में यह हुई है कि न तो यह सचित्र है, न दो-तीन रंगों में है और न एकरंगा प्रकाशन ही सुन्दर और आकर्षक है। वर्णमाला की पुस्तक होने के कारण इसमें इन गुणों का होना आवश्यक था परन्तु अर्थ की कमी के कारण ऐसा नहीं किया जा सका। संभव है, किसी सहृदय सहायक की कृपा से अग्रिम संस्करण में इन त्रुटियों का निराकरण हो सके।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६—अन्य जो प्रूफसंशोधन तथा मुद्रण की त्रुटियाँ रह गई हैं इनके सुधार के लिये अन्त में एक शुद्धाशुद्ध पत्र लगा दिया गया है। तदनुसार छात्रों तथा शिक्षकों को पुस्तक में सुधार कर लेना चाहिये।

कुछ आवश्यक निर्देश

१—इस पुस्तक में, जैसा कि इसका नाम है, वर्णों तथा शब्दों के समस्त उदाहरण लयबद्ध रूप में लिखे गये हैं। अतः प्रत्येक उदाहरण को कविता या गीत के समान किसी लय में ही पढ़ना चाहिये, बिना लय के नहीं। एक-एक उदाहरण २-३ लयों में भी पढ़ा जा सकता है। अध्यापक और छात्र इस पर बराबर ध्यान रखेंगे।

२—वर्णों के साथ शब्दों का उच्चारण करते समय उनके बीच में भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न शब्दों को मिला कर कहने की प्रथा है। जैसे उत्तर-प्रदेश में कहीं-कहीं वर्णों और शब्दों के बीच में 'माने" शब्द लगा दिया जाता है। यथा—क माने कबूतर, ख माने खरगोश" इत्यादि। तदनुसार यदि छात्र चाहें तो अपने-अपने प्रदेश की प्रथा के अनुसार इस पुस्तक के भी वर्णों और शब्दों के बीच किसी शब्द को लगा कर बोल सकते हैं

३—पुस्तक में वर्णों के साथ जो शब्द दिये गये हैं वे विभक्तिसहित दिये गये हैं परन्तु नीचे अर्थ के साथ उनका विभक्तिरहित मूल रूप भी दे दिया गया है। इसी प्रकार क्रियाओं के साथ भी नीचे उनके मूल धातु दे दिये गये हैं। कहीं-कहीं टिप्पणी देकर भी मूल शब्दों का उल्लेख कर दिया है। पढ़ते-पढ़ाते समय छात्रों तथा अध्यापकों को इस बात का ध्यान रखना चाहिये जिससे मूल शब्दों तथा विभक्तिसहित पदों के अन्तर का ज्ञान हो सके।

४—इस पुस्तक में जो शब्द दिये गये हैं उनमें लिङ्ग का निर्देश नहीं किया गया है। क्योंकि आरम्भ में बालकों को केवल मूल शब्द और उनका प्रथमा के एकवचन का रूप ही बतला देना पर्याप्त है। फिर भी जो छात्र लिङ्ग का भी ज्ञान करना चाहें वे अध्यापकों से पूछ कर उसकी जानकारी कर सकते हैं।

५—उपर्युक्त नियम के विपरीत व्यंजन, वर्णों की स्वराक्षरी तथा संयुक्ताक्षर प्रकरण में जो विभक्तिसहित पद दिये गये हैं उनके साथ उनका मूल शब्द न देकर केवल अर्थ ही दे दिया गया है। विद्यार्थियों को चाहिये कि वे स्वर एवं व्यंजन वर्णों के प्रकरण में प्रदत्त शब्दों के मूल एवं विभक्तिसहित रूपों के अनुसार यहां भी विभक्तिसहित पदों से उनके मूल शब्दों को समझ लेनेका प्रयास करें। जहाँ सन्देह हो वहाँ अध्यापकों से पूछ कर उसका निवारण कर लेना चाहिये। अध्यापकों को चाहिये कि वे आवश्यकतानुसार स्वयं इस बातको छात्रों को बतला दिया करें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६—संयुक्ताक्षर प्रकरण में अनेक विशेषण शब्द भी आये हैं जिनके सामने संक्षेप में "वि०" लिख दिया गया है। परन्तु पिछले प्रकरण में कहीं-कहीं यह निर्देश छूट गया है। अध्यापकों को चाहिये कि वे वैसे स्थलों पर ऐसा निर्देश कर दिया करें।

७—इस पुस्तक में वर्णों के साथ जितने शब्द और क्रियायें उल्लिखित हैं उन्हें न केवल छात्रों को कण्ठस्थ ही करना चाहिये प्रत्युत उनका प्रतिदिन के बोलचाल में व्यवहार भी करना चाहिये। पुस्तक में जो क्रियायें दी गई हैं उनका विद्यार्थी यदि किसी भी काल, किसी भी पुरुष तथा किसी भी वचन में प्रयोग करें तो कोई हानि नहीं। ऐसा प्रयत्न होना चाहिये कि छात्र कुछ संकेत के साथ इन्हीं शब्दों एवं क्रियाओं की सहायता से संस्कृत में किसी सीमा तक अपना अभिप्राय प्रगट कर सकें।

विद्वज्जनों से निवेदन

अब मैं अन्तरङ्ग एवं बहिरङ्ग दोनों दृष्टियों से इस पुस्तक को अधिक उपयोगी एवं आकर्षक बनाने के सम्बन्ध में विद्वज्जनों से कुछ सुझाव देने के लिये निवेदन करना चाहता हूँ ताकि इसका अग्रिम प्रकाशन सर्वाङ्गपूर्ण और सर्वोत्तम हो सके। इस सम्बन्ध में जो सज्जन कोई नवीन उपयोगी सुझाव देंगे उनका मैं अत्यन्त आभारी रहूँगा।

कृतज्ञता-प्रकाश

इस पुस्तक के प्रकाशन में जिन सहृदय सज्जनों ने हमारी आर्थिक सहायता की है उनकी नामावली पुस्तक में अन्यत्र प्रकाशित है। अन्त में मैं उन सभी सज्जनों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि वे अपने-अपने परिवार तथा क्षेत्र में इस पुस्तक का प्रचार कर हमारे परिश्रम और अपनी सहायता को अधिकाधिक सफल बनाने की कृपा करेंगे।

श्रावणी अमा, २०२६ वि०
वाराणसी।

विनीत
सम्पादक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय-सूची

१—स्वरवर्णों के गीत १–२
२—व्यञ्जनवर्णों के गीत ३–१६
३—व्यञ्जनवर्णों की स्वराचरी (बारह खड़ी) ... १७–२४
४—संयुक्ताक्षर-तालिका २५–३२
५—संख्यावाचक संस्कृत शब्द ३३–३४
६—पूरणार्थक संख्याशब्द ३५–३६
७—संख्या का प्रस्तार (पहाड़ा) ३७–३९
८—शुद्धाशुद्ध पत्र ४०–

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर-वर्णों के गीत

प्रथम उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

अ अन्नम्	**आ आम्रम्**	**इ इक्षुः**	**ई ईशः**
अन्न अनाज	आम्र आम	इक्षु ईख	ईश प्रभु
उ उष्ट्रः	**ऊ ऊर्णा**	**ऋ× ऋक्षः**	**ॠ मातॄः+**
उष्ट्र ऊँट	ऊर्णा ऊन	ऋक्ष भालू	मातॄः माताओंको
ऌ× क्लृप्तम्	**ए एकः**	**ऐ ऐक्यम्**	**ओ ओष्ठः**
क्लृप्त बनाया हुआ	एक एक	ऐक्य एकता	ओष्ठ ओठ
औ औष्ण्यम्		**अं अंशुः**	
औष्ण्य गर्मी		अंशु किरण	

द्वितीय उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

अ अग्निः	**आ आलुः**	**इ इन्द्रः**	**ई ईषा**
अग्नि आग	आलु आलू	इन्द्र इन्द्र	ईषा हरिस
उ उदरम्	**ऊ ऊर्मिः**	**ऋ ऋषभः**	**ॠ पितॄन्+**
उदर पेट	ऊर्मि लहर	ऋषभ बैल	पितॄन् पिताओंको
ऌ क्लृप्तिः	**ए एला**	**ऐ ऐन्द्रिः**	**ओ ओजः**
क्लृप्ति बनावट	एला इलायची	ऐन्द्रि इन्द्रपुत्र	ओजस् बल
औ औघः		**अं अंशः**	
औघ प्रवाह		अंश हिस्सा	

× संस्कृत में ऋ तथा ऌ से आरम्भ होने वाले शब्द नहीं होते। अतः इनके लिये ऐसे ही शब्द दिये गये हैं जिनके मध्य अथवा अन्त में ये स्वर पड़ते हैं।

+ मातॄ पितॄन् ये दोनों पद मातृ पितृ शब्द के द्वितीया के बहुवचन के रूप हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीय उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

अ अरविन्दम्	आ आगारः	इ इर्वारुः	ई ईशानी
अरविन्द कमल	आगार घर	इर्वारु ककड़ी	ईशानी दुर्गा
उ उलूखलम्	ऊ ऊर्णायुः	ऋ ऋग्वेदः	ॠ मातॄणम्
उलूखल ओखल	ऊर्णायु मकड़ा	ऋग्वेद ऋग्वेद	मातॄणम् मातृ-ऋण
ऌ क्लृप्ताङ्गः	ए एरण्डः	ऐ ऐश्वर्यम्	ओ ओङ्कारः
क्लृप्ताङ्ग सुसज्जित	एरण्ड रेंड	ऐश्वर्य धन-सम्पत्ति	ओंकार ओंकार
	औ औदार्यम्	अं अंगारः	
	औदार्य उदारता	अंगार अंगार	

चतुर्थ उदाहरण (क्रियायें)

अ अस्ति	अ अर्चति	अ अर्जति	आ आस्ते
है (अस्)	पूजा करता है (अर्च्)	कमाता है [अर्ज्]	बैठता है (आस्)
इ इच्छति	उ उदयति	ऋ ऋच्छति	ए एजति
चाहता है (इष्)	उगता है (उत् अय)	जाता है (ऋच्छ)	काँपता है (एज)

पंचम उदाहरण (क्रियायें)

अ अवगच्छति	आ आगच्छति	उ उत्तिष्ठति	उ उपविशति
समझता है (अव-गम्)	आता है (आ-गम्)	उठता है (उत्-स्था)	बैठता है (उप-विश)
आ आकर्षति	आ आह्वयति	उ उद्गच्छति	अं अंकयति
खींचता है (आ-कृष)	बुलाता है (आ-ह्वे)	उगता है (उद्-गम्)	आँकता है (अंक)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्यञ्जन-वर्णों के गीत

प्रथम उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

क करः	ख खरः	ग गजः	घ घटः	ङ उदङ्
कर हाथ	खर गदहा	गज हाथी	घट घड़ा	उदञ्च् उत्तर
च चमूः	छ छदिः	ज जलम्	झ झषः	ञ उकञ्[1]
चमू सेना	छदिस् छप्पर	जल पानी	झष मछली	एक प्रत्यय
ट पटः	ठ शठः	ड गुड़ः	ढ दृढ़ः	ण पणः
पट कपड़ा	शठ दुष्ट	गुड़ गुड़	दृढ़ मजबूत	पण पैसा
त तरुः	थ रथः	द दधि	ध धनुः	न नरः
तरु वृक्ष	रथ रथ	दधि दही	धनुष् धनुस	नर आदमी
प पशुः	फ फलम्	ब कबः	भ भटः	म मठः
पशु जानवर	फल फल	बक बगुला	भट योद्धा	मठ मठ

य यवः	र रथ	ल लता	व वटः
यव जौ	रथ रथ	लता लता	वट वरका पेड़
श शशः	ष वृषः	स सखा	ह हलः
शश खरहा	वृष बैल	सखि मित्र	हल हल
क्ष क्षतम्	त्र त्रपा	ज्ञ ज्ञता[2]	
क्षत घाव	त्रपा लज्जा	ज्ञता जानकारी	

---

(१) एक कृत् प्रत्यय जिससे कामुक, भावुक आदि शब्द बनते हैं। (२) अभिज्ञ अभिज्ञता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीय उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

क कमलम् ख खटिका ग गगनम् घ घटिका ङ रङ्गः
कमल कमल खटिका खड़िया गगन आकाश घटिका घड़ी रङ्ग रङ्ग

च चणकम् छ छत्रम् ज जम्बूः झ झिल्ली ञ यज्ञः
चणक चना छत्र छत्ता जम्बू जामुन झिल्ली झिंगुर यज्ञ यज्ञ

ट लकुटः ठ कमठः ड डमरुः ढ ढक्का ण गणना
लकुट लकड़ा कमठ कछुआ डमरु डमरु ढक्का ढाक गणना गिनती

त तुलसी थ शपथः द दण्डः ध धरणी न नकुलः
तुलसी तुलसी शपथ सौगन्द दण्ड डंडा धरणी भूमि नकुल नेवला

प पनसम् फ फलकम् ब बदरः भ भवनम् म मकरः
पनस कटहल फलक तख्ता बदर बैर भवन घर मकर मगर

य यमुना र रजकः ल लगुडम् व वरटः
यमुना यमुनानदी रजक धोबी लगुड लाठी वरट बर्रे

श शकटम ष वृषभः स सलिलम् ह हरिणः
शकट छकड़ा वृषभ बैल सलिल पानी हरिण हिरन

क्ष क्षरणम् त्र त्रासः ज्ञ ज्ञप्तिः
क्षरण टपकना त्रास भय ज्ञप्ति घोषणा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीय उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

क कर्णः ख खड्गः ग गन्त्री घ घण्टा ङ रङ्गः

कर्ण कान खड्ग तलवार गन्त्री गाड़ी घण्टा घन्टा रङ्ग रंग

च चक्रम् छ छत्रम् ज जीवः झ झञ्झा ञ चञ्चुः

चक्र चक्का छत्र छत्ता जीव जीव झञ्झा आँधीपानी चञ्चु चोंच

ट शाटी ठ कण्ठः ड नीडम् ढ गाढः ण वाणः

शाटी साड़ी कण्ठ कंठ नीड घोंसला गाढ गाढा वाण बाण

त तक्रम् थ यूथम् द दन्तः ध धान्यम् न नप्ता

तक्र मट्ठा यूथ झुन्ड दन्त दांत धान्य अनाज नप्तृ नाती

प पत्रम् फ फुल्लम् ब बण्डः भ भङ्गा म मत्स्यः

पत्र पत्ता चिठ्ठी फुल्ल फूला हुआ वण्ड बाँड भङ्गा भांग मत्स्य मछली

य यात्री र रज्जुः ल लट्वः व वक्षः

यात्रिन् राहगीर रज्जु रस्सी लट्व लोटा वक्षस् छाती

श शय्या ष षण्ढः स सक्तुः ह हंसः

शय्या सेज षण्ढ नपुंसक साक्तु सत्तू हंस हंस

क्ष क्षवथुः त्र त्राणम् ज्ञ ज्ञानम्

क्षवथु छींक त्राण रक्षा ज्ञान ज्ञान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुर्थ उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

क कुक्कुरः ख खण्डिका ग गर्दभः घ घोटकः ङ सङ्गमः
कुक्कुर कुत्ता खण्डिका खड़िया गर्दभ गदहा घोटक घोड़ा सङ्गम मिलना

च चन्द्रमाः छ छागलः ज जम्बुकः झ झल्लरी ञ अञ्जलिः
चन्द्रमस् चन्द्रमा छागल बकरा जम्बुक सियार झल्लरी झाल अञ्जलि अञ्जलि

ट टिट्टिभः ठ ठक्कुरः ड डिंडिमः ढ ढिंढिनी ण ब्राह्मणः
टिट्टिभ टिटिहरी ठक्कुर ठाकुर डिण्डिम ढिंढोरा ढिंढिनी एक पौधा ब्राह्मण ब्राह्मण

त तस्करः थ सारथिः द दर्पणः ध धावकः न नापितः
तस्कर चोर सारथि यानचालक दर्पण आइना धावक दूत नापित नाई

प पर्कटी फ फाल्गुनः ब बालकः भ भल्लुकः म मक्षिका
पर्कटी पकड़ी फाल्गुन फागुन बालक लड़का भल्लुक भालू मक्षिका मक्खी

य याचकः र राक्षसः ल लेखकः व वानरः
याचक मांगनेवाला राक्षस राक्षस लेखक लिखनेवाला वानर बन्दर

श शष्कुली ष षड्गुणा स सागरः ह होलिका
शष्कुली पूड़ी षड्गुणाः छ गुण सागर समुद्र होलिका होली

क्ष क्षत्रियः त्र त्राणदः ज्ञ ज्ञानवान्
क्षत्रिय क्षत्रिय त्राणद रक्षक ज्ञानवत् ज्ञानी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चम उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

क कपाटम् ख खगोलः ग गवाक्षः घ घरट्टः ङ विहङ्गः
कपाट केवाड़ी खगोल खगोल गवाक्ष झरोखा घरट्ट चक्की विहङ्ग पक्षी

च चकोरः छ गुलुच्छः ज जलौकाः झ झषाङ्कः ञ समज्ञा
चकोर चकोर गुलुच्छ गुच्छ जलौका जोंक झषाङ्क कामदेव समज्ञा सभा

ट पटीरः ठ कुठारः ड कड़म्बः ढ द्रढिष्ठः ण कृपाणः
पटीर चन्दन कुठार कुल्हाड़ा कड़म्ब डंठल द्रढिष्ठ मजबूत कृपाण तलवार

त तमालम् थ गृहस्थः द दरिद्रः ध धनाढ्यः न नगेशः
तमाल एक वृक्ष गृहस्थ गृहस्थ दरिद्र गरीब धनाढ्य धनी नगेश हिमालय

प पटोलः फ फणीन्द्रः ब बिडालः भ भरित्रम् म मयूरः
पटोल परवल फणीन्द्र शेष बिडाल बिल्ली भरित्र भर्ता मयूर मोर

य यवानी र रसालः ल लवङ्गः व वलाका
यवानी अजवाइन रसाल आम लवंग लौंग वलाका बकपंक्ति

श शलाका ष विषाणः स समुद्रः ह हसन्ती
शलाका सलाई विषाण सींघ समुद्र समुद्र हसन्ती अंगीठी

क्ष क्षमावान् त्र त्रिकोणः ज्ञ अभिज्ञः
क्षमावत् सहिष्णु त्रिकोण त्रिकोण अभिज्ञ जानकार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षष्ठ उदाहरण [क्रियायें]

क कृषति	ख खनति	ग गलति	घ घुटति
खींचता है [कृष]	खनता है [खन]	गलता है [गल]	घोटता है [घुट]
च चलति	छ छुपति	ज जपति	ज जयति
चलता है [चल]	छूता है [छुप]	जपता है [जप]	जीतता है [जि]
ज ज्वलति	त तपति	द दिशति	ध धरति
जलता है [ज्वल]	तपता है [तप]	देता है [दिश]	पकड़ता है। [धृ]
न नयति	प पचति	प पतति	फ फलति
ले जाता है [नी]	पकाता है [पच]	गिरता है [पत]	फलता है [फल]
भ भजति	भ भवति	म मिलति	य यजति
भजता है [भज]	होता है [भू]	मिलता है [मिल]	यज्ञ करता है [यज्ञ]
र रटति	ल लिखति	ल लगति	ल लुठति
रटता है [रट]	लिखता है [लिख]	लगता है (लग)	लुढकता है (लुठ]
व वदति	व वहति	व वसति	व विशति
बोलता है (वद)	वहता है, ढोता है (वह)	बसता है (वस)	घुसता है (विश)
श श्वयति	स सरति	स स्मरति	स सृजति
सूजता है (श्व)	सरकता है (सृ)	सुमिरता है (स्मृ)	सिरजता है (सृज)
	ह हसति	ह हरति	
	हँसता है (हस)	हरता है (हृ)	

इस उदाहरण में एक-एक अक्षर के लिए दो तीन क्रियायें भी दे दी गई है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सप्तम उदाहरण (क्रियायें)

क कुरुते	क कुप्यति	ग गर्जति	ज जनयति
करता है (कृ)	कोप करता है (कुप)	गरजता है (गर्ज)	पैदा करता है (जन)
त तनुते	त तक्षति	द ददते	न नयते
फैलाता है (तन)	छीलता है (तक्ष)	देता है (दद)	ले जाता है (नी)
प पृच्छति	ब बुक्कति	भ भृज्जति	ल लुञ्चति
पूछता है (प्रच्छ)	भूँकता है (बुक्क)	भूजता है (भ्रस्ज)	नोंचता है (लुञ्च

अष्टम उदाहरण (क्रियायें)

क कम्पते	क कासते	क कूर्दते	घ घोटते
काँपता है (कम्प)	खाँसता है (कास)	कूदता है (कुर्द)	घोटता है (घुट)
ज जायते	द दीप्यते	ब बुध्यते	ब बाधते
पैदा होता है (जन)	चमकता है (दीप)	बूझता है (बुध)	बाधा करता है (बाध)
भ भक्षयति	भ भ्रंशते	म मन्यते	य याचते
खाता है (भक्ष)	गिरता है (भ्रंश)	मानता है (मन)	मांगता है (याच)
र राजते	र रोचते	र रञ्जयति	ल लंघते
शोभित होता है (राज)	रुचता है (रुच)	रंगता है (रञ्ज)	लांघता है (लंघ)
ल लज्जते	व वर्द्धते	श शोभते	श शिक्षते
लजाता है (लस्ज)	बढ़ता है (वृध)	शोभित होता है (शुभ)	सीखता है (शिक्ष)

ह हेषते

हिनहिनाता है (हेष)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवम उदाहरण (क्रियायें)

(निम्नलिखित क्रियाओं को हिन्दी अर्थ के साथ भी लयबद्ध रूप में पढ़ा जा सकता है)

क करोति	क कथयति	ख खादति	ग गच्छति
करता है (कृ)	कहता है (कथ)	खाता है (खाद)	जाता है (गम्)
ग गणयति	ग गायति	घ घर्षति	च चिनुते
गिनता है (गण)	गाता है (गै)	घिसता है (घृष)	चुगता है (चि)
च च्यवते	छ छलयति	ज जीवति	ज जल्पति
चूता है (च्यु)	छलता है (छल)	जीता है (जीव)	बकता है [जल्प]
ठ तिष्ठति	ड डयते[1]	ढ द्रढयति	ण प्रणमति[2]
रुकता है [स्था]	उड़ता है [डी]	कसता है [दृढ़]	झुकता है [नम]
त त्रस्यति	द ददाति	ध धत्ते	न निवसति[3]
डरता है [त्रस]	देता है [दा]	रखता है [धा]	रहता है [वस]
प प्रविशति[4]	फ फुल्लति	ब ब्रवीति	भ भुंक्ते
घुसता है [विश]	खिलता है [फुल्ल]	कहता है [ब्रू]	खाता है [भुज]
म मन्थति	म म्रियते	र रोदिति	र रचयति
मथता है [मन्थ]	मरता है [मृ]	रोता है [रुद]	रचता है [रच]
ल लभते	व वपते	व वयते	श शेते
पाता है [लभ]	बोता है [वप]	बुनता है [वे]	सोता है [शी]
श शृणोति	स सहते	स सीव्यति	ह हरते
सुनता है [श्रु]	सहता है [सह]	सीता है [सीव]	हरता है [हृ]

१—इस क्रिया का उत् उपसर्ग के साथ ही प्रयोग होता है। जैसे—उत्–डयते, उड्डयते (उड़ता है)। २, ३, ४—इन तीनों में नि और प्र उपसर्ग लगा हुआ है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दशम उदाहरण× (क्रियायें)

(निम्नलिखित क्रियाओं को हिन्दी अर्थ के साथ भी लयबद्ध रूप में पढ़ा जा सकता है)

क कर्षति	क कृन्तति	ख खेलति	ग गुम्फति
खींच रहा है [कृष]	काट रहा है [कृन्त]	खेल रहा है [खेल]	गूथ रहा है [गुम्फ]
च चूषति	त त्रुट्यति	द दुग्धे	ध धावति
चूस रहा है [चूष]	टूट रहा है [त्रुट]	दूह रहा है [दुह]	दौड़ रहा है [धाव]
न नृत्यति	प पश्यति*	भ भ्राम्यति	म मुञ्चति
नाच रहा है [नृत]	देख रहा है [दृश]	घूम रहा है [भ्रम]	छोड़ रहा है [मुञ्च]
म मज्जति	य युध्यति	र रुन्धे	ल लुण्ठति
डूब रहा है [मज्ज]	जूझ रहा है [युध]	रोक रहा है [रुध]	लूट रहा है [लुण्ठ]
श शोचति	श शुष्यति	स सिञ्चति	
सोच रहा है [शुच]	सूख रहा है [शुष]	सींच रहा है [सिञ्च]	

× इन क्रियाओं का अर्थ लय बैठाने की दृष्टि से "खींचता है, काटता है" आदि के स्थान पर "खींच रहा है, काट रहा है" ऐसा लिखा गया है ।

* दृश धातु के स्थान पर पश्य आदेश हो जाता है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एकादश उदाहरण (प्रेरणार्थक क्रियायें)

(निम्नलिखित क्रियाओं को हिन्दी अर्थ के साथ भी लयबद्ध रूप में पढ़ा जा सकता है)

क कारयति	क कम्पयति	ख खादयति	ख खेलयति
कराता है [कृ]	कँपाता है [कम्प]	खिलाता है [खाद]	खेलाता है [खेल]
ग गूहयति	घ घ्रापयति	च चाषयति	च चालयति
छिपाता है [गुह]	सुंघाता है [घ्रा]	चखाता है [चष]	चलाता है [चल]
च चारयति	छ छादयति	ज ज्वालयति	ज्ञ ज्ञापयति
चराता है [चर]	छवाता है [छद]	जलाता है [ज्वल]	बताता है [ज्ञा]
ड डाययति[1]	त तापयति	द दर्शयति	द दापयति
उड़ाता है [डी]	तपाता है [तप]	दिखाता है [दृश]	दिलाता है [दा]
द दोलयति	ध धावयति	न नर्तयति	प पाठयति
डुलाता है [दुल]	धुलाता है [धाव]	नचाता है [नृत]	पढ़ाता है [पठ]
प पाययति	प पीडयति	फ फुल्लयति	ब बोधयति
पिलाता है [पा]	दुखाता है [पीड]	फुलाता है [फुल्ल]	जगाता है [बुध]
ब बुक्कयति	ब बोधयति	भ भाययति	भ भोजयति
भुँकाता है [बुक्क]	बुझाता है [बुध]	डराता है [भी]	खिलाता है [भुज]
भ भ्रामयति	म मज्जयति	म मोचयति	म मिश्रयति
घुमाता है [भ्रम]	डुबाता है [मज्ज]	छुड़ाता है [मुञ्च]	मिलाता है (मिश्र)
य यातयति	य योधयति	र रोदयति	ल लेखयति
सताता है (या)	लड़ाता है (युध)	रुलाता है (रुद)	लिखाता है (लिख)

१—इसका प्रयोग प्रायः उत् उपसर्ग के साथ "उड्डाययति" इस रूप में किया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ल लोपयति	ल लोभयति	व वादयति	व वापयति
मिटाता है (लुप)	लुभाता है (लुभ)	बजाता है (वद)	बोआता है (वप)
व वाहयति	व वासयति	व वाययति	श शाययति
ढोआता है [वह]	बसाता है [वस]	बुनाता है [वे]	सुलाता है [शी]
श शोषयति	श शेषयति	स सज्जयति	स सीवयति
सुखाता है (शुष)	बँचाता है (शिष)	सजाता है (सज्ज)	सिलाता है (सीव)
स स्वापयति	ह हारयति	ह हासयति	
सुलाता है (स्वप)	गँवाता है (हृ)	हँसाता है (हस)	

द्वादश उदाहरण (एक स्वरवाले अनेक शब्द)

अ अन्नं अग्निः अमृतम्	आ आम्रम् आलुः आम्लम्
अन्न । आग । अमृत	आम । आलू । खट्टा ।
इ इक्षुः इन्दुः इन्द्रः	ई ईशः ईषा ईर्ष्या
ईख । चन्द्रमा । इन्द्र ।	ईश्वर । हरीस । डाह ।
उ उष्ट्रः उदरम् उष्णम्	ऊ ऊर्णा ऊर्ध्वम् ऊर्ज्जा
ऊँट । पेट । गर्म	ऊन । ऊपर । शक्ति ।
ऋ ऋक्षः ऋक्थम् ऋषभः	ए एला एण एक
भालू । हक । बैल	इलायची । हरिण । एक
ऐ ऐन्द्री ऐलः ऐक्यम्	ओ ओघः ओष्ठः ओल्लः
पूर्व दिशा । राजा पुरुरवा । एकता ।	प्रवाह । ओठ । ओल ।
औ औघः औड्रः औष्ण्यम्	अं अंशः अंकः कंसः
प्रवाह । उड़िया । उष्णता	हिस्सा । गोदी । कटोरा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्रयोदश उदहारण (एक व्यञ्जनवाले अनेक शब्द)

क	कमलं	कलिका	कलशः	ख	खटिका	खट्वा	खदिरम्
	कमल।	कली।	कलश।		खड़िया।	खाट।	खैर।
ग	गगनं	गरुडः	गणितम्	घ	घटिका	घटना	घटकः
	आकाश।	गरुड़।	गणित।		घड़ी।	घटना।	दलाल।
च	चरणं	चणकः	चटका	छ	छलना	छगलः	छुरिका
	पैर।	चना।	गौरैया		छल।	बकरा।	छूरी।
ज	जननी	जनकः	जठरम्	झ	झञ्झा	झिरिका	झटिति
	माता।	पिता।	पेट।		आँधी-पानी।	झींगुर।	झटपट।
ट	लकुटी	शकटः	विटपः	ठ	कमठः	पिठर	शठता
	छड़ी।	छकड़ा।	शाखा।		कछुआ।	बटलोही।	दुष्टता।
ड	डमरुः	डयनं	बडिशः	ढ	दृढ़ता	गाढः	मूढः
	डमरू।	उड़ना।	वंशी।		मजबूती।	गाढ़ा]	मूर्ख।
ण	विपणिः	गणकः	गणना	त	तरणिः	तुलसी	तिलकम्
	बाजार।	ज्योतिषी।	गिनती।		नौका।	तुलसी।	तिलक।
थ	कथनं	वमथुः	कथकः	द	दमनं	दयिता	दुहिता
	कहना।	उल्टी।	कहने वाला		दबाना।	स्त्री।	लड़की।
ध	धरणी	धमनी	धनिकः	न	नगरं	नगरी	नकुलः
	पृथ्वी।	नाड़ी।	धनी।		नगर।	नगरी।	न्यौला।
प	पटलं	पथिकः	पुलकः	फ	फलकं	फलितं	फलिनी
	समूह।	राही।	रोमाञ्च।		तख्ता।	फला हुआ।	एक लता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब बडिशं बड़वा बदरी
वंशी। घोड़ी। बैर।

भ भवनं भुवनं भजनम्
घर। लोक। भजन।

म मकरः मुकुटः मुशलम्
मगर। मौर। मूसल।

य युवकः युवती यजनम्
जवान। जवान स्त्री। यज्ञ।

र रजतं रजनी रसना
चाँदी। रात। जीभ।

ल लगुडः लवणं लतिका
लाठी। नमक। लता।

व वदनं वचनं वनिता
मुँह। वचन-बोली। स्त्री।

श शकटः शकटी शलभः
गाडी। छोटी गाडी। टिड्डी।

ष विषयः विषमः सुषमा
विषय। कठिन। शोभा।

स सरसी सलिलं समितिः
सरोवर। पानी। सभा।

ह हरिणः हरिणी हवनम्
मृग। मृगी। होम।

चतुर्दश उदाहरण (एक व्यञ्जनवाली अनेक क्रियायें)

क कथयति कर्षति कुरुते
कहता है। खींचता है। करता है।

ख खनते खादति खेलति
खनता है। खाता है। खेलता है।

ग गणयति गर्जति गायति
गिनता है। गर्जता है। गाता है।

घ घटयति घर्षति घूर्णति
गढ़ता है। घिसता है। घूमता है।

च चर्वति चूषति च्यवते
चबाता है। चूसता है। चूता है।

छ छलयति छुपति छिन्ते
छलता है। छूता है। काटता है।

ज जल्पति जीवति जिघ्रति
बोलता है। जीता है। सूंघता है।

झ झटति झषति झर्झति
जोड़ना। मारना। बोलना।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त तर्जति तनुते तुष्यति द दमयति ददते दंशति
छीलता है। तानता है। तुष्ट होता है। दबाता है। देता है। डँसता है।

ध धत्ते धावति ध्यायति न नन्दति निवसति नृत्यति
धारण करता है। दौड़ता है। ध्यान करता है। खुश होता है। रहता है नाचता है

प पचति पुनीते पृच्छति फ फलति स्फोटति फुल्लति
पकाता है। पवित्र करता है। पूछता है। फलता है। फूटता है। फूलता है।

ब बोधति बुक्कति ब्रूते भ भ्राम्यति भुंक्ते भृज्जति
बूझता है। भूकता है। बोलता है। घूमता है। खाता है। भूजता है।

म मन्थति म्रियते मज्जति य यजति याचते यच्छति
मथता है। मरता है। डूबता है। यज्ञ करता है। माँगता है। देता है

र रक्षति रचयति रोदिति ल लगति लज्जते लुण्ठति
रक्षा करता है। रचता है। रोता है। लगता है। लजाता है। लूटता है।

व वदति वन्दते वृश्चति श शपति शिक्षते शुष्यति
बोलता है। वन्दना करता है। काटता है। शाप देता है। सीखता है सूखता है

स सहते सिञ्चति सीव्यति ह हसति हिण्डते हृष्यति
सहता है। सींचता है। सीता है। हसता है। घूमता है। खुश होता है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्यञ्जन वर्णों की स्वराक्षरी (बारहखड़ी)

क कदली	का काकः	कि किरणः	की कीटः	कु कुम्भः	कू कूर्मः
केला	कौआ	किरन	कीड़ा	घड़ा	कछुआ
कृ कृषकः	के केशः	कै कैलाशः	को कोशः	कौ कौपीनम्	कं कंसः
किसान	बाल	एक पर्वत	खजाना	लँगोटा	कटोरा
ख खट्वा	खा खाद्यम्	खि खिन्नः	खी शाखी[1]	खु आखुः	खू आखूः
खाट	खाद्य	दुखी	पेड	चूहा	चूहिया
खृ खृष्टः	खे खेला	खै शङ्खैः[2]	खो खोलिः	खौ शंखौ[3]	खं खंजः
क्रिस्त	खेल	शंखों से	तरकस	दो शंख	लंगड़ा
ग गरुडः	गा गावः[4]	गि गिरिजा	गी गीता	गु गुल्फः	गू गूथः
गरुड़	गायें	पार्वती	गीता	टखना	विष्ठा
गृ गृध्रः	गे गेहम्	गै गैरिकम्	गो गोपः	गौ गौरः	गं गंधः
गीध	घर	गेरु	ग्वाला	गौरा	गन्ध
घ घट्टः	घा घासः	घि लघिमा[5]	घी संघी[6]	घु घुटिका	घू घूकः
घाट	घास	लघुता	संघी	घुट्टी	उल्लू
घृ घृष्टि	घे मेघे[7]	घै मेघैः[8]	घो घोलः	घौ मेघौ[9]	घं घंटा
घिसाई	मेघ में	मेघों से	घोल	दो मेघ	घंटा

१—शाखिन् । २,३—शंख शब्द के तृतीया के बहुवचन और प्रथमा के द्विवचन का रूप । ४—गो शब्द का प्रथमा के बहुवचन का रूप । ५—लघिमन् । ६—संघिन् । ७, ८, ९—मेघ शब्द का सप्तमी एकवचन, मेघ शब्द के तृतीया बहुवचन, मेघ शब्द का प्रथमा द्विवचन का रूप ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

च चन्द्रः चा चापम् चि चिपुटः ची चीरम् चु चुल्ली चू चूडा
चन्द्रमा धनुष चिउड़ा कपड़ा चूल्ह चोटी

चृ याचृ[१] चे चेलम् चै चैत्रः चो चोरः चौ चौर्यम् चं चंचुः
माँगना कपड़ा चैत चोर चोरी चोंच

छ छन्दः[२] छा छागः छि छिद्रम् छी उच्छी[३] छु छुरिका छू कच्छूः
छन्द बकरा छेद हटाना छूरी खुजली

छृ च्छृदिर[४] छे छेदः छै गुच्छैः[५] छो अच्छोदः छौ गुच्छौ[६] छं छं छं
चमकना टुकड़ा गुच्छों से तालाब दो गुच्छ छं छं

ज जठरम् जा जानुः जि जिह्वा जी जीवः जु जुष्टः जू जूटः
पेट घुटना जीभ जीव जूठा जूड़ा

जृ जृम्भा जे जेता जै जैनः जो जोषा जौ मुरजौ[७] जं जंघा
जँभाई विजयी जैन स्त्री दो मृदंग जाँघ

झ झल्ली झा झाटः झि झिल्ली झी झीरुका झु झुमरिः झू झूलिः
ढोलकी झाड़ी झींगुर झींगुर एक गीत सुपारी

झ जृझृ[८] झे उज्झेत्[९] झै उज्झैः[१०] झो झोडः झौ झौलिकम् झं झंपा
नष्ट होना छोड़ना चाहिये छोड़ने से सुपारी झोली छलाँग

१, ३, ४, ८—एक धातु। २—छन्दस्। ५, ६—गुच्छ शब्द के तृतीया, बहुवचन तथा प्रथमा द्विवचन का रूप। ७—मुरज शब्द का प्रथमा, द्विवचन का रूप। ९—ऊज्झ धातु के लिङ् लकार प्र० पु० एकवचन का रूप। १०—उज्झ शब्द के तृतीया, बहुवचन का रूव।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ट चटकः	टा घाटा	टि पुटिका	टी वाटी	टु वटुकः	टू चाटूक्तिः
गौरैया	घाँटी	पुड़िया	वाड़ी	ब्रह्मचारी	चाटुकारी
टृ योट्टृ[१]	टे कीटे[२]	टै कीटैः[३]	टो टोपः	टौ अष्टौ	टं टंकः
बाँधना	कीड़े में	कीड़ों से	टोप	आठ	टाँकी
ठ कमठः	ठा काष्ठा	ठि कठिनम्	ठी पाठी[४]	ठु ठुमरिः	ठू शून्यम्
कछुआ	सीमा	कठिन	पढ़ने वाला	एक गीत	—
ठृ शून्यम्	ठे पाठेः[५]	ठै पाठैः[६]	ठो कठोरः	ठौ पाठौ[७]	ठं ठं ठं[८]
—	पाठ में	पाठों से	कठोर	दो पाठ	ठं ठं
ड डमरुः	डा चूडा	डि डिम्भः	डी डीनम्	डु गड्डुकम्	डू अड्डूषः
डमरु	चोटी	बच्चा	उड़ान	गड़ुआ	अरुष
डृ तुड्डृ[९]	डे निगडे[१०]	डै निगडैः[११]	डो डोलः	डौ निगडौ[१२]	डं डंकः
तोडना	बेडी में	बेडियों से	डोल	दो बेडियाँ	डंक
ढ ढक्का	ढा ~~बाढम्~~[१३] ढालम्	ढि दाढिः	ढी दाढी	ढु ढुंढिः	ढू शून्यम्
ढाक	~~बहुत अच्छा~~ ढाल	दाढी	दाढी	ढोढ़ी	—
ढृ वोढृ	ढे ढेक्कारः	ढै मूढैः[१४]	ढो ढोलः	ढौ मूढौ[१५]	ढं ढं ढं[१६]
ढोनेवाला	ढकार	मूर्खों से	ढोल	दो मूर्ख	ढं ढं

१, ९—एक धातु। २—कीट शब्द का सप्तमी एकवचन। ३—कीट शब्द का तृतीया बहुवचन। ४—पाठिन्। ५—पाठ शब्द का सप्तमी एकवचन। ६—पाठ शब्द का तृतीया बहुवचन। ७—पाठ शब्द का प्रथमा द्विवचन। ८—ध्वन्यात्मक। १०, ११, १२—निगड शब्द के सप्तमी एकवचन, तृतीया बहुवचन तथा प्रथमा द्विवचन के रूप। १३—अव्यय। १४, १५—मूढ शब्द के तृतीया बहुवचन तथा प्रथमा द्विवचन के रूप।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ण काणः णा वीणा णि तरणिः णी गोणी णु रेणुः णू चाणूरः
काना वीणा नाथ बोरा धूल एक राक्षस

णृ ओणृ[1] णे गणेशः णै प्राणैः[2] णो णोनः णौ गुणौघः णं णं णं[4]
हटाना गणेश प्राणों से एक सूत्र[3] गुण-समूह णं णं

त तक्रम् ता तारा ति तिलकम् ती तीरम् तु तुन्दम् तू तूलम्
मट्ठा तारा तिलक किनारा तोंद रुई

तृ तृष्णा ते तेजः[5] तै तैलम् तो तोयम् तौ तौलम् तं तंकः
प्यास तेज तेल पानी तराजू आतंक

थ ग्रन्थः था कन्था थि ग्रन्थिः थी वीथी थु वमथुः थू थूत्कारः
ग्रन्थ गुदड़ी गाँठ गली वमन थूक

थृ नाथृ[6] थे ग्रन्थे[7] थै ग्रन्थैः[8] थो पाथोजः थौ ग्रन्थौघः थं थं थं
माँगना ग्रन्थ में ग्रन्थों से कमल ग्रन्थ-समूह थं थं[9]

द दर्वी दा दात्रम् दि दिवसम् दी दीपः दु दुहिता दू दूर्वा
करछुल दाँती दिन दीआ लड़की दूभ

दृ दृष्टिः दे देवः दै दैत्यः दो दोला दौ दौत्यम् दं दंशः
नजर देवता दैत्य डोला दूतकार्य डँस

१, ६—एक धातु। २—प्राण शब्द के तृतीया बहुवचन का रूप। ३—न को ण करनेवाला
४, ९—ध्वन्यात्मक। ५—तैजस्। ७—ग्रन्थ शब्द के सप्तमी एकवचन का रूप।
८—ग्रन्थ शब्द के तृतीया बहुवचन का रूप।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध धमनी धा धात्री धि धिषणा धी धीमान्[१] धु धुर्यः धू धूम्रः
नस धाई बुद्धि बुद्धिमान् भार ढोनेवाला धूआँ
धृ धृष्टः धे धेनुः धै धैर्य्यम् धो गन्धोली धौ धौतम् धं धं धं[२]
ढीठ गाय धीरता बर्रे धोया हुआ धं धं

न नयनम् ना नाभिः नि निम्बः नी नीरम् नु नुन्नम् नू नूनम्
आँख नाभि नीम पानी कटा हुआ अवश्य
नृ नृपतिः ने नेत्रम् नै नैशम् नो नोचेत्[३] नौ नौका नं नंदः
राजा आँख रात का अन्यथा नाव नाद

प पक्षी[४] पा पात्रम् पि पिटिका पी पीठम् पु पुष्पम् पू पूगः
चिड़िया बरतन फुन्सी पीढ़ा फूल सुपारी
पृ पृष्ठम् पे पेशी पै पैत्रम् पो पोतः पौ पौत्रः पं पंकः
पीठ पेशी पुस्तैनी जहाज पोता पाँक

फ फलकम् फा फालः फि गुम्फितम् फी स्फीतम् फु फुल्लम् फू फूत्कृ
तख्ता फार गूथा हुआ बढ़ा हुआ फूला हुआ फूँकना
फृ शून्यम् फे फेनः फै रेफैः[५] फो स्फोटः फौ रेफौ[६] फं फं फं[७]
— फेन रेफों से फोड़ा दो रेफ फं फं

१—धीमन्। २, ७—अनुकरणात्मक। ३—अव्यय। ४—पक्षिन्। ५—रेफ शब्द के तृतीया बहुवचन का रूप। ६—रेफ शब्द के प्रथमा द्विवचन का रूप।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब बन्धुः बा बाहुः बि बिल्वः बी बीजम् बु बुद्धः बू शम्बूः

बन्धु बाँह बेल बीज महात्मा बुद्ध घोंघा

बृ बृहती बे बेड़ा बै बैल्वम् बो बोधिः बौ बौद्धः बं बं बं[1]

तम्बूरा नाव बेलका ज्ञान बुद्धानुयायी बं बं

भ भस्त्रा भा भार्या भि भिक्षुः भी भीमः भु भुजगः भू भूपः

भाथी स्त्री भिक्षुक भीम साँप राजा

भृ भृङ्ग भे भेकः भै भैमी भो भोगः भौ भौमः भं भंगा

भँवरा मेढक दमयन्ती सुख भोग मंगल भाँग

म मशकः मा माला मि मित्रम् मी मीनः मु मुशलम् मू मूकः

मच्छड़ माला मित्र मछली मूसल गूँगा

मृ मृगया मे मेषः मै मैत्री मो मोदः मौ मौनम् मं मंडः

शिकार मेढ़ मित्रता आनन्द चुप्पी माँड

य यवनः या यागः यि न्यायी[2] यी गवयी यु युगलम् यू यूका

मुसलमान यज्ञ न्यायी एक पशु जोड़ा जूँ

यृ चायृ[3] ये प्रायेण[4] यै न्यायैषी[5] यो योगः यौ यौनम् यं यं यं

पूजना प्रायः न्याय चाहनेवाला योग विवाह जिसको-जिसको

१—अनुकरणात्मक। २—न्यायिन्। ३—एक धातु। ४—अव्यय। ५—न्यायैषिन्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

र रजनी	रा राजा	रि रिक्तम्	री रीतिः	रु रुधिरम्	रू रूप्यम्
रात	राजा	खाली	रिवाज	खून	रुपया
रृ शून्यम्	रे रेखा	रै रैवतः	रो रोगः	रौ रौप्यम्	रं रंभा
—	रेखा	एक पर्वत	रोग		चाँदी केला

ल लशुनम्	ला लाक्षा	लि लिक्षा	ली लीला	लु लुब्धः	लू लूता
लहसुन	लाख	लीख	लीला	लोभी	मकड़ी
लृ गम्लृ[1]	ले लेखा	लै लैङ्गम्	लो लोकः	लौ लौहम्	लं लंका
जाना	रेखा	लिङ्गपुराण	लोग, जगत्	लोहा	लंका

व वदनम्	वा वायुः	वि विद्युत्	वी वीणा	वु चिवुकम्	वू वूर्णः
मुँह	हवा	विजली	वीणा	ठुड्डी	चुना हुआ
वृ वृषभः	वे वेत्रम्	वै वैश्यः	वो वोढा[2]	वौ वौषट्[3]	वं वंशः
बैल	बेंत	वैश्य	ढोनेवाला	एक याज्ञिक शब्द	कुल

श शस्यम्	शा शाकः	शि शिविका	शी शीर्षम्	शु शुक्तिः	शू शूलम्
फसल	शाग	पालकी	मस्तक	सीप	शूल
शृ शृङ्गम्	शे शेषः	शै शैलः	शो शोथः	शौ शौचम्	शं शंखः
सींघ	बचा हुआ	पर्वत	सूजन	सफाई	शंख

१—एक धातु। २—वोढृ। ३—अव्यय।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ष षष्ठिः	षा योषा	षि कृषिकः	षी महिषो	षु इषुधिः	षू कर्षूः
साठ	स्त्री	किसान	भैंस	तरकस	करसी
षृ जेषृ[1]	षे महिषे[2]	षै महिषैः[3]	षो षोडश	षौ महिषौ[4]	षं षंढः
जाना	भैंस पर	भैसों से	सोलह	दो भैसे	नपुंसक
स सरणिः	सा साधुः	सि सिन्धुः	सी सीमा	सु सुरभिः	सू सूतम्
रास्ता	साधु	समुद्र	सीमा	सुगन्ध	सूत
सृ सृष्टि	से सेतुः	सै सैन्यम्	सो सोमः	सौ सौधम्	सं संध्या
सृष्टि	पूल	सेना	चन्द्रमा	अटारी	साँझ
ह हस्ती[5]	हा हारः	हि हिङ्गुः	ही हीरः	हु हुण्डः	हू हूणाः
हाथी	हार	हींग	हीरा	हुड	हूण
हृ हृदयम्	हे हेम[6]	है हैमः	हो होमः	हौ हौम्यम्	हं हंसः
हृदय	सोना	सोने का	हवन	हवनसामग्री	हंस

१—एक धातु। २-३-४ महिष शब्द के सप्तमी एक बचन, तृतीया बहुबचन तथा प्रथमा द्विवचन का रूप। ५ हस्तिन्। ६ हेमन्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संयुक्ताक्षर-तालिका

क संयोग

(क के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क् क क्क चिक्कण वि० चिकना ल् क ल्क शल्कम् छाल

ष् क ष्क शुष्क वि० सूखा हुआ स् क स्क तस्करः चोर

ग संयोग

(ग के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

द् ग द्ग उद्गमः उत्पत्ति ल् ग ल्ग वल्गा लगाम

च संयोग

(च के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

च् च च्च उच्चः वि० ऊँचा श् च श्च निश्चयः निश्चय

छ संयोग

(छ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

च् छ च्छ तुच्छ वि० नाचीज श् छ श्छ शिरश्छेदः सिर काटना

ज संयोग

(ज के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

ज् ज ज्ज कज्जलम् काजल ब् ज ब्ज अब्जम् कमल

झ संयोग

(झ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

ज् झ ज्झ उज्झित वि० छोड़ा हुआ

ञ संयोग

(ञ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

च् ञ च्ञ याच्ञा माँग ज् ञ ज्ञ ज्ञानम् ज्ञान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ट संयोग

(ट के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

ट् ट ट्ट भट्टः विद्वान्   ष् ट ष्ट कष्टम् तकलीफ

ठ संयोग

(ठ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

ष् ठ ष्ठ षष्ठिः साठ

ड संयोग

(ड के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

ड् ड ड्ड उड्डयनम् उड़ान

ण संयोग

(ण के साथ अन्य वर्णों का संयोग).

क् ण क्ण वृक्ण वि० कटा हुआ   ग् ण ग्ण रुग्ण वि० रोगी

ण् ण ण्ण विषण्ण वि० दुःखी   ष् ण ष्ण कृष्ण वि० काला

ह् ण ह्ण अपराह्णः दोपहर

त संयोग

(त के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क् त क्त रक्तम् खून   त् त त्त चित्तम् मन

प् त प्त प्राप्त वि० मिला हुआ   स् त स्त हस्तः

थ संयोग

(थ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

त् थ त्थ उत्थानम् उठान   स् थ स्थ स्थानम् जगह

द संयोग

(द के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

द् द द्द उद्दामः वि० बेलगाम   ब् द ब्द शब्दः शब्द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध संयोग

(ध के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

ग्‌ ध	ग्ध	दुग्धम्	दूध	द्‌ ध	द्ध	बुद्धिः	बुद्धि

न संयोग

(न के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क्‌ न	क्न	शक्नोति	सकता है	ग्‌ न	ग्न	अग्निः	आग
घ्‌ न	घ्न	विघ्नः	बाधा	त्‌ न	त्न	रत्नम्	रत्न
न्‌ न	न्न	अन्नम्	अनाज	प्‌ न	प्न	स्वप्नः	सपना
म्‌ न	म्न	निम्न	वि० नीचा	श्‌ न	श्न	प्रश्नः	प्रश्न
स्‌ न	स्न	स्नानम्	स्नान	ह्‌ न	ह्न	चिह्नम्	चिन्ह

प संयोग

(प के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

म्‌ प	म्प	चम्पा	चमेली	ष्‌ प	ष्प	पुष्पम्	फूल
ल्‌ प	ल्प	तल्पम्	बिछौना	स्‌ प	स्प	वनस्पतिः	वनस्पति

फ संयोग

(फ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

म्‌ फ	म्फ	गुम्फः	गुच्छ	ल्‌ फ	ल्फ	गुल्फः	घुट्टी

ब संयोग

(ब के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

म्‌ ब म्ब लम्ब वि० लम्बा

भ संयोग

(भ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

द्‌ भ	द्भ	उद्भवः	उत्पत्ति	ल्‌ भ	ल्भ	प्रगल्भ	वि० ढीठ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म संयोग

(म के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क् म	क्म	रुक्मम्	सोना	ग् म	ग्म	वाग्मी[2]	वक्ता
ङ् म	ङ्म	वाङ्मयम्	साहित्य	ड् म	ड्म	कुड्मलः	कली
ण् म	ण्म	षण्मुखः	कार्तिकेय	त् म	त्म	आत्मा[3]	आत्मा
द् म	द्म	पद्मम्	कमल	ध् म	ध्म	आध्मानम्	फूलना
न् म	न्म	जन्म[1]	जन्म	म् म	म्म	सम्मुखम्	सामने
ल् म	ल्म	वाल्मीकिः	वाल्मीकि	श् म	श्म	श्मश्रु	दाढ़ी-मूँछ
ष् म	ष्म	ग्रीष्मः	गर्मी	स् म	स्म	भस्म[4]	राख
ह् म	ह्म	ब्रह्मा[5]	ब्रह्मा				

य संयोग

(य के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क् य	क्य	वाक्यम्	वाक्य	ख् य	ख्य	मुख्य	वि० प्रधान
ग् य	ग्य	भाग्यम्	भाग्य	च् य	च्य	शोच्य	वि० शोचनीय
ज् य	ज्य	राज्यम्	राज्य	ट् य	ट्य	नाट्यम्	नाटक
ठ् य	ठ्य	पाठ्य	वि० पढ़ने योग्य	ड् य	ड्य	जाड्यम्	जड़ता
ढ् य	ढ्य	मौढ्यम्	मूर्खता	ण् य	ण्य	पुण्यम्	पुण्य
त् य	त्य	सत्यम्	सत्य	थ् य	थ्य	पथ्यम्	हितकर
द् य	द्य	विद्या	विद्या	ध् य	ध्य	बाध्य	वि० विवश
न् य	न्य	अन्य	वि० दूसरा	प् य	प्य	रौप्यम्	रूपा

नोट :— १—जन्मन्, २—वाग्मिन्, ३—आत्मन् ४—भस्मन् ब्रह्मन् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भ् य भ्य सभ्य वि० सभ्य
म् य म्य रम्य वि० सुन्दर
य् य य्य शय्या सेज
ल् य ल्य मूल्यम् कीमत
व् य व्य नव्य वि० नया
श् य श्य श्याम वि० साँवला
ष् य ष्य शिष्यः विद्यार्थी
स् य स्य शस्यम् फसल
ह् य ह्य सह्य वि० सहनीय

र संयोग

र के साथ अन्य वर्णों का संयोग

क् र क्र नक्रः नाक
घ् र घ्र शीघ्रम् अ० जल्दी
ज् र ज्र वज्रम् वज्र
ढ् र ढ्र मेढ्रः मेंढा
त् र त्र नेत्रम् आँख
द् र द्र निद्रा नींद
ध् र ध्र गृध्रः गीध
प् र प्र प्रीतिः प्रेम
ब् र ब्र ब्रततिः लता
भ् र भ्र भ्राता (पु०) भाई
म् र म्र आम्रम् आम
व् र व्र व्रतम् व्रत
श् र श्र श्रवणम् कान
स् र स्र स्रवः टपकना
ह् र ह्र ह्रदः झील

रेफ संयोग

(रेफ र्‍ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

र्‍ ऋ र्ऋ नैर्ऋत्य दक्षिण-पश्चिम कोण
र्‍ क र्क अर्कः सूर्य
र्‍ ख र्ख मूर्खः वि० मूर्ख
र्‍ ग र्ग दुर्गा दुर्गा
र्‍ घ र्घ दीर्घ वि० लम्बा
र्‍ च र्च अर्चा पूजा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

र् छ र्छ मूर्छा बेहोशी   र् ज र्ज दुर्जनः दुष्ट
र् झ र्झ निर्झरः झरना   र् ण र्ण कर्णः कान
र् थ र्थ अर्थः धन, माने   र् द र्द्र आर्द्र वि० गीला
र् ध र्ध निर्धन वि० गरीब   र् न र्न दुर्नाम[2] बदनामी
र् प र्प शूर्पः सूप   र् ब र्ब दुर्बोध वि० गँवार
र् भ र्भ निर्भय वि० निडर   र् म र्म निर्माणम् रचना
र् य र्य निर्यासः गोंद   र् ल र्ल दुर्लभ त्रि० दुर्लभ
र् व र्व दुर्वासाः[1] एक ऋषि   र् श र्श दर्शनम् दर्शन
र् ष र्षः हर्षः खुशी   र् ह र्ह अर्ह वि० योग्य

ल संयोग
(ल के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क् ल क्ल शुक्ल वि० सफेद   ग् ल ग्ल ग्लानिः कष्ट
प् ल प्ल प्लीहा पिलही   म् ल म्ल म्लान वि० मुरझा हुआ
ल् ल ल्ल पल्लवः पल्लव   श् ल श्ल श्लोकः श्लोक
ह् ल ह्ल आह्लादः खुशी

व संयोग
(व के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क् व क्व पक्व वि० पका हुआ   ज् व ज्व ज्वरः ज्वर
ट् व ट्व खट्वा खाट   त् व त्व त्वरा जल्दी
द् व द्व द्वारम् दरवाजा   ध् व ध्व ध्वनिः आवाज
न् व न्व अन्वयः वंश   ल् व ल्व विल्वः बेल

नोट :-- १—दुर्वासस्, २—दुर्नामन् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श् व श्व अश्वः घोड़ा ष् व ष्व विष्वक् (अव्यय) चारों ओर

ह् व ह्व जिह्वा जीभ

स संयोग

(स के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

त् स त्स उत्सवः उत्सव प् स प्स अप्सराः अप्सरा

पञ्चमवर्ण संयोग

(कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग तथा पवर्ग के साथ पञ्चम वर्णों का संयोग)

ङ् क ङ्क अङ्कः संख्या ङ् ख ङ्ख शङ्खः शंख

ङ् ग ङ्ग सङ्गः सङ्गति ङ् घ ङ्घ सङ्घः समूह

ञ् च ञ्च काञ्ची करधनी ञ् छ ञ्छ वाञ्छा इच्छा

ञ् झ ञ्झ झञ्झा आँधी-पानी ञ् ज ञ्ज अञ्जनम् आँजन

ण् ट ण्ट घण्टा घण्टा ण् ठ ण्ठ कण्ठः कंठ

ण् ड ण्ड दण्डः ण् ढ ण्ढ शण्ढः साँड़

ण् ण ण्ण तृण्ण वि० कटा हुआ न् त न्त दन्तः दाँत

न् थ न्थ ग्रन्थः ग्रन्थ न् द न्द मन्द वि० धीरा

न् ध न्ध अन्धः अन्धा न् न न्न अन्नम् अन्न

म् ब म्ब अम्बा अम्मा म् भ म्भ शम्भुः शिव

म् म म्म सम्मतिः राय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीन वर्णों का संयोग

क् ष् ण	क्ष्ण	तीक्ष्ण	वि० तीखा	ज् ज् व	ज्ज्व	उज्ज्वल	उजला
ङ् क् ष	ङ्क्ष	काङ्क्षा	इच्छा	त् त् व	त्त्व	तत्त्वम्	असलीयत
त् त् र	त्त्र	छात्त्रः	विद्यार्थी	न् त् र	न्त्र	मन्त्रः	मन्त्र
त् म् य	त्म्य	माहात्म्यम्	महत्त्व	न् द् र	न्द्र	चन्द्रः	चन्द्रमा
न् त् व	न्त्व	सान्त्वना	तसल्ली	म् प् र	म्प्र	सम्प्रति	अ० इस समय
न् ध् य	न्ध्य	विन्ध्यः	विन्ध्य पहाड़	र् च् च	र्च्च	अर्च्चा	पूजा
म् भ् र	म्भ्र	सम्भ्रमः	सम्मान	र् ज् ज	र्ज्ज	गर्ज्जनम्	गरजना
र् च् छ	र्च्छ	मूर्च्छा	बेहोशी	र् व् व	र्व्व	गर्व्वः	घमंड
र् द् द	र्द्द	कर्द्दमः	पाँक	ष् ट् र	ष्ट्र	राष्ट्रम्	राष्ट्र
र् म् म	र्म्म	कर्म्म	काम	स् त् र	स्त्र	अस्त्रम्	हथियार
र् य् य	र्य्य	आर्य्य	वि० श्रेष्ठ				
र् श् व	र्श्व	पार्श्व	बगल				
ष् प् र	ष्प्र	निष्प्रयोजनम्	बेकाम				
क् ष् म	क्ष्म	लक्ष्मीः	लक्ष्मी				

चार वर्णों का संयोग

र् द् ध् व	र्द्ध्व	ऊर्द्ध्वम्	अ० ऊपर
र् द् ध् य	र्द्ध्य	परार्द्ध्य	सर्वोच्च संख्या

पांच वर्णों का संयोग

र् त् स् न् य	र्त्स्न्य	कार्त्स्न्यम्	सम्पूर्णता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संख्यावाचक संस्कृत शब्द

(प्रार्थना के बाद छात्रों से हिन्दी की तरह संस्कृत में भी गिनती करानी चाहिये जिस से सभी छात्रों को संख्याशब्दों का अच्छी तरह ज्ञान हो जाय)

एक	१	एकविंशति	२१	एकचत्वारिंशत्	४१
द्वि	२	द्वाविंशति	२२	द्विचत्वारिंशत्	४२
त्रि	३	त्रयोविंशति	२३	त्रिचत्वारिंशत्	४३
चतुर्	४	चतुर्विंशति	२४	चतुश्चत्वारिंशत्	४४
पञ्चन्	५	पञ्चविंशति	२५	पञ्चचत्वारिंशत्	४५
षष्	६	षड्विंशति	२६	षट्चत्वारिंशत्	४६
सप्तन्	७	सप्तविंशति	२७	सप्तचत्वारिंशत्	४७
अष्टन्	८	अष्टाविंशति	२८	अष्टचत्वारिंशत्	४८
नवन्	९	ऊनत्रिंशत्	२९	ऊनपञ्चाशत्	४९
दशन्	१०	त्रिंशत्	३०	पञ्चाशत्	५०
एकादशन्	११	एकत्रिंशत्	३१	एकपञ्चाशत्	५१
द्वादशन्	१२	द्वात्रिंशत्	३२	द्विपञ्चाशत्	५२
त्रयोदशन्	१३	त्रयस्त्रिंशत्	३३	त्रिपञ्चाशत्	५३
चतुर्दशन्	१४	चतुस्त्रिंशत्	३४	चतुःपञ्चाशत्	५४
पञ्चदशन्	१५	पञ्चत्रिंशत्	३५	पञ्चपञ्चाशत्	५५
षोडशन्	१६	षट्त्रिंशत्	३६	षट्पञ्चाशत्	५६
सप्तदशन्	१७	सप्तत्रिंशत्	३७	सप्तपञ्चाशत्	५७
अष्टादशन्	१८	अष्टात्रिंशत्	३८	अष्टपञ्चाशत्	५८
ऊनविंशति	१९	ऊनचत्वारिंशत्	३९	ऊनषष्ठि	५९
विंशति	२०	चत्वारिंशत्	४०	षष्ठि	६०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एकषष्ठि	६१	षट्सप्तति	७६	नवति	९०
द्विषष्ठि	६२	सप्तसप्तति	७७	एकनवति	९१
त्रिषष्ठि	६३	अष्टसप्तति	७८	द्विनवति	९२
चतुःषष्ठि	६४	ऊनाशीति	७९	त्रिनवति	९३
पञ्चषष्ठि	६५	अशीति	८०	चतुर्णवति	९४
षट्षष्ठि	६६	एकाशीति	८१	पञ्चनवति	९५
सप्तषष्ठि	६७	द्व्यशीति	८२	षण्णवति	९६
अष्टषष्ठि	६८	त्र्यशीति	८३	सप्तनवति	९७
ऊनसप्तति	६९	चतुरशीति	८४	अष्टनवति	९८
सप्तति	७०	पञ्चाशीति	८५	नवनवति	९९
एकसप्तति	७१	षडशीति	८६	शत	१००
द्विसप्तति	७२	सप्ताशीति	८७	सहस्र	१०००
त्रिसप्तति	७३	अष्टाशीति	८८	लक्ष	१०००००
चतुःसप्तति	७४	ऊननवति	८९	कोटि	१०००००००
पञ्चसप्तति	७५				

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूरणार्थक संख्यावाचक शब्द

(प्रार्थना के बाद छात्रों को पहले की भाँति इन शब्दों से भी गिनती करानी चाहिए जिस से छात्रों को इन शब्दों का भी अच्छा अभ्यास हो जाय)

प्रथम	पहला	पञ्चविंशतितम	पचीसवाँ
द्वितीय	दूसरा	षड्विंशतितम	छब्बीसवाँ
तृतीय	तीसरा	सप्तविंशतितम	सत्ताइसवाँ
चतुर्थ	चौथा	अष्टाविंशतितम	अठ्ठाइसवाँ
पञ्चम	पाँचवाँ	ऊनत्रिंशत्तम	उन्तीसवाँ
षष्ठ	छठवाँ	त्रिंशत्तम	तीसवाँ
सप्तम	सातवाँ	एकत्रिंशत्तम	इक्तीसवाँ
अष्टम	आठवाँ	द्वात्रिंशत्तम	बत्तीसवाँ
नवम	नवाँ	त्रयस्त्रिंशत्तम	तैंतीसवाँ
दशम	दसवाँ	चतुस्त्रिंशत्तम	चौंतीसवाँ
एकादश	इग्यारवहवाँ	पञ्चत्रिंशत्तम	पैंतीसवाँ
द्वादश	बारहवाँ	षट्त्रिंशत्तम	छत्तीसवाँ
त्रयोदश	तेरहवाँ	सप्तत्रिंशत्तम	सैंतीसवाँ
चतुर्दश	चौदहवाँ	अष्टात्रिंशत्तम	अड़तीसवाँ
पञ्चदश	पन्द्रहवाँ	ऊनचत्वारिंशत्तम	उन्तालिसवाँ
षोडश	सोलहवाँ	चत्वारिंशत्तम	चालीसवाँ
सप्तदश	सत्रहवाँ	एकचत्वारिंशत्तम	इक्तालीसवाँ
अष्टादश	अट्ठारहवाँ	द्विचत्वारिंशत्तम	बयालीसवाँ
ऊनविंशतितम	उन्नीसवाँ	त्रिचत्वारिंशत्तम	तैंतालीसवाँ
विंशतितम	बीसवाँ	चतुश्चत्वारिंशत्तम	चौवालीसवाँ
एकविंशतितम	इक्कीसवाँ	पञ्चचत्वारिंशत्तम	पैंतालीसवाँ
द्वाविंशतितम	बाइसवाँ	षट्चत्वारिंशत्तम	छियालीसवाँ
त्रयोविंशतितम	तेइसवाँ	सप्तचत्वारिंशत्तम	सैंतालीसवाँ
चतुर्विंशतितम	चौबीसवाँ	अष्टचत्वारिंशत्तम	अड़तालीसवाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊनपञ्चाशत्तम	उन्चासवाँ	पञ्चसप्ततितम	पचहत्तरवाँ
पञ्चाशत्तम	पचासवाँ	षट्सप्ततितम	छिहत्तरवाँ
एकपञ्चाशत्तम	इक्यावनवाँ	सप्तसप्ततितम	सतहत्तरवाँ
द्विपञ्चाशत्तम	बावनवाँ	अष्टसप्ततितम	अठहत्तरवाँ
त्रिपञ्चाशत्तम	तिरपनवाँ	ऊनाशीतितम	उन्नासिवाँ
चतुःपञ्चाशत्तम	चौवनवाँ	अशीतितम	अस्सिवाँ
पञ्चपञ्चाशत्तम	पचपनवाँ	एकाशीतितम	एकासिवाँ
षट्पञ्चाशत्तम	छप्पनवाँ	द्व्यशीतितम	बयासिवाँ
सप्तपञ्चाशत्तम	सन्तावनवाँ	त्र्यशीतितम	तिरासिवाँ
अष्टपञ्चाशत्तम	अट्ठावनवाँ	चतुरशीतितम	चौरासिवाँ
ऊनषष्ठितम	उनसठवाँ	पञ्चाशीतितम	पचासिवाँ
षष्ठितम	साठवाँ	षडशीतितम	छियासिवाँ
एकषष्ठितम	एकसठवाँ	सप्ताशीतितम	सतासिवाँ
द्विषष्ठितम	बासठवाँ	अष्टाशीतितम	अठासिवाँ
त्रिषष्ठितम	तिरसठवाँ	ऊननवतितम	उन्यासिवाँ
चतुःषष्ठितम	चौसठवाँ	नवतितम	नब्बवाँ
पञ्चषष्ठितम	पैसठवाँ	एकनवतितम	इक्यानवाँ
षट्षष्ठितम	छाछठवाँ	द्विनवतितम	बानवाँ
सप्तषष्ठितम	सतसठवाँ	त्रिनवतितम	तिरानवाँ
अष्टषष्ठितम	अड़सठवाँ	चतुर्नवतितम	चौरानवाँ
ऊनसप्ततितम	उनहत्तरवाँ	पञ्चनवतितम	पञ्चानवाँ
सप्ततितम	सत्तरवाँ	षण्णवतितम	छियानवाँ
एकसप्ततितम	एकहत्तरवाँ	सप्तनवतितम	सन्तानवाँ
द्विसप्ततितम	बहत्तरवाँ	अष्टनवतितम	अट्ठानवाँ
त्रिसप्ततितम	तिहत्तरवाँ	नवनवतितम	निन्यानवाँ
चतुःसप्ततितम	चौहत्तरवाँ	शततम	सौवाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रस्तार (पहाड़ा)

एक का पहाड़ा

एककम्	एक	१
द्विकम्	द्वि	२
त्रिकम्	त्रि	३
चतुष्कम्	चतुर्	४
पञ्चकम्	पञ्चन्	५
षट्कम्	षष्	६
सप्तकम्	सप्तन्	७
अष्टकम्	अष्टन्	८
नवकम्	नवन्	९
दशकम्	दशन्	१०

दो का पहाड़ा

द्विकम्	द्वि	२
द्विद्विकम्	चतुर्	४
द्वित्रिकम्	षष्	६
द्विचतुष्कम्	अष्टन्	८
द्विपञ्चकम्	दशन्	१०
द्विषट्कम्	द्वादशन्	१२
द्विसप्तकम्	चतुर्दशन्	१४
द्वि-अष्टकम्	षोडशन्	१५
द्विनवकम्	अष्टादशन्	१८
द्विदशकम्	विंशति	२०

तीन का पहाड़ा

त्रिकम्	त्रि	३
त्रिद्विकम्	षष्	६
त्रित्रिकम्	नवन्	९
त्रिचतुष्कम्	द्वादशन्	१२
त्रिपञ्चकम्	पञ्चदशन्	१५
त्रिषट्कम्	अष्टादशन्	१८
त्रिसप्तकम्	एकविंशति	२१
त्रि-अष्टकम्	चतुर्विंशति	२४
त्रिनवकम्	सप्तविंशति	२७
त्रिदशकम्	त्रिंशत्	३०

चार का पहाड़ा

चतुष्कम्	चतुर्	४
चतुर्द्विकम्	अष्टन्	८
चतुस्त्रिकम्	द्वादशन्	१२
चतुश्चतुष्कम्	षोडशन्	१६
चतुपञ्चकम्	विंशति	२०
चतुःषट्कम्	चतुर्विशति	२४
चतुःसप्तकम्	अष्टाविंशति	२८
चतुरष्टकम्	द्वात्रिंशत्	३२
चतुर्नवकम्	षट्त्रिंशत्	३६
चतुर्दशकम्	चत्वारिंशत्	४०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाँच का पहाड़ा

पञ्चकम्	पञ्चन्	५
पञ्चद्विकम्	दशन्	१०
पञ्चत्रिकम्	पञ्चदशन्	१५
पञ्चचतुष्कम्	विंशति	२०
पञ्चपञ्चकम्	पञ्चविंशति	२५
पञ्चषट्कम्	त्रिंशत्	३०
पञ्चसप्तकम्	पञ्चत्रिंशत्	३५
पञ्चाष्टकम्	चत्वारिंशत्	४०
पञ्चनवकम्	पञ्चचत्वारिंशत्	४५
पञ्चदशकम्	पञ्चाशत्	५०

सात का पहाड़ा

सप्तकम्	सप्तन्	७
सप्तद्विकम्	चतुर्दशन्	१४
सप्तत्रिकम्	एकविंशति	२१
सप्तचतुष्कम्	अष्टाविंशति	२८
सप्तपञ्चकम्	पञ्चत्रिंशत्	३५
सप्तषट्कम्	द्विचत्वारिंशत्	४२
सप्तसप्तकम्	ऊनपञ्चाशत्	४९
सप्ताष्टकम्	षट्पञ्चाशत्	५६
सप्तनवकम्	त्रिषष्टि	६३
सप्तदशकम्	सप्तति	७०

छ का पहाड़ा

षट्कम्	षष्	६
षट्द्विकम्	द्वादशन्	१२
षट्त्रिकम्	अष्टादशन्	१८
षट्चतुष्कम्	चतुर्विंशति	२४
षट्पञ्चकम्	त्रिंशत्	३०
षट्षट्कम्	षट्त्रिंशत्	३६
षट्सप्तकम्	द्विचत्वारिंशत्	४२
षडष्टकम्	अष्टचत्वारिंशत्	४८
षड्नवकम्	चतुःपञ्चाशत्	५४
षड्दशकम्	षष्ठि	६०

आठ का पहाड़ा

अष्टकम्	अष्टन्	८
अष्टद्विकम्	षोडशन्	१६
अष्टत्रिकम्	चतुर्विंशति	२४
अष्टचतुष्कम्	द्वात्रिंशत्	३२
अष्टपञ्चकम्	चत्वारिंशत्	४०
अष्टषट्कम्	अष्टचत्वारिंशत्	४८
अष्टसप्तकम्	षट्पञ्चाशत्	५६
अष्टाष्टकम्	चतुःषष्ठि	६४
अष्टनवकम्	द्वासप्तति	७२
अष्टदशकम्	अशीति	८०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नौ का पहाड़ा

नवकम्	नवन्	९
नवद्विकम्	अष्टादशन्	१८
नवत्रिकम्	सप्तविंशति	२७
नवचतुष्कम्	षट्त्रिंशत्	३६
नवपञ्चकम्	पञ्चचत्वारिंशत्	४५
नवषट्कम्	चतुःपञ्चाशत्	५४
नवसप्तकम्	त्रिषष्ठि	६३
नवाष्टकम्	द्विसप्तति	७२
नवनवकम्	एकाशीति	८१
नवदशकम्	नवति	९०

दश का पहाड़ा

दशकम्	दशन्	१०
दशद्विकम्	विंशति	२०
दशत्रिकम्	त्रिंशत्	३०
दशचतुष्कम्	चत्वारिंशत्	४०
दशपञ्चकम्	पञ्चाशत्	५०
दशषट्कम्	षष्ठि	६०
दशसप्तकम्	सप्तति	७०
दशाष्टकम्	अशीति	८०
दशानवकम्	नवति	९०
दशदशकम्	शत	१००

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धिपत्र

(निम्नलिखित निर्देशानुसार कृपया पुस्तक को शुद्ध कर लें)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१४	ऋषभ	ऋषभ
३	११	कवः	वक्रः
६	१४	षड्गुणा	षड्मुखः
,,	१५	छ गुण	कार्तिकेय
१३	१६	एण	एणः
,,	,,	एक	एकः
१५	१८	क्षपति	क्षुपति
१७	१६	घृष्टि	घृष्टिः
१८	७	च्छृदिर्	छृदिर्
१८	१५	भ्रू	भ्रू
१६	७	पाठेः	पाठे
२२	७	भृङ्ग	भृङ्गः
२२	११	म	मं
२३	३	रैवत	रैवतः
२३	१३	शस्यम	शस्यम्
२४	५	सूतम्	सूत्रम्
२४		सृष्टि	सृष्टिः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आवश्यक निवेदन

जो सज्जन घर बैठे सरलता, शीघ्रता और मनोरंजन के साथ स्वयं संस्कृत सीखना चाहते हों और अपने बाल-बच्चों को सिखाना चाहते हों वे कार्यालय द्वारा प्रकाशित संस्कृत शिक्षणोपयोगी पुस्तक-पुस्तिकाओं तथा पोस्टरों को मँगाकर अपनी अभिलाषा पूर्ण करें। कृपया सूचीपत्र के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर पत्र लिखें —

व्यवस्थापक—

सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय

डी० ३८/२० हौजकटोरा, वाराणसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi